International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(II), July- September, 2025, pp. 59-63

पर्यटन के आर्थिक प्रभाव

डॉ. ऋचा चौहान*

व्याख्याता, व्यावसायिक प्रशासन, श्री भवानी निकेतन महिला पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: drrichachauhan1974@gmail.com

Citation: **ऋचा चौहान** *(2025).* **पर्यटन के आर्थिक प्रभाव**. *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(II)), 59–63*

सार

पर्यटन विभिन्न देशों के बीच और देश के भीतर आपसी समझ और तालमेल स्थापित करता है और भावनात्मक एकीकरण को बढ़ावा देता है। इक्कीसवीं शताब्दी से पर्यटन को आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में पहचाना जाने लगा है। पर्यटन उद्योग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करने की अद्भुत क्षमता है। पर्यटन सम्बन्धी क्रियाकलापों से परोक्ष रूप से दूर–दूर तक लोग जुड़े होते हैं और इसकी एक श्रृंखला सी बन जाती है। पर्यटन ने उन क्षेत्रों में रोजगार पैदा किए हैं जहाँ रोजगार के वैकल्पिक अवसर बहुत कम मौजूद हैं। पर्यटन का रोजगार और आय प्रभाव एक दूसरे से गहरे रूप में सम्बद्ध हैं और ये एक ही स्त्रोत अर्थात पर्यटक व्यय पर आश्रित होते हैं। पर्यटन उद्योग अपने स्थानीय बाजार क्षेत्रों से जितनी ज्यादा सेवाएँ और वस्तुएँ खरीदेगा, आय पर उसका गुणित प्रभाव उतना ही अधिक होगा। सेवाओं और वस्तुओं के आयात की प्रवृत्ति जितनी ज्यादा कम होगी, आय पर गुणित प्रभाव उतना ही घटेगा। विभिन्न प्रकार के करों से भी आमदनी होती है। भारत की विदेशी मुद्रा अर्जन सम्बन्धी आर्थिक गतिविधि में पर्यटन की प्रमुख भूमिका रही है। भारत सरकार का पर्यटन विभाग प्रतिवर्ष आने वाले पर्यटकों की संख्या और प्रति विदेशी पर्यटक व्यय को गुणा करके प्रतिवर्ष त्वरित आकलन प्रस्तुत करता है। विदेशी मुद्रा अर्जन की गणना करते समय पर्यटन विकास के लिए किए जाने वाले आयात को भी शामिल किया जाना चाहिए। विदेशी पर्यटन से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है। विदेशी पर्यटक अपने–अपने देशों में वस्तुओं के प्रचार के माध्यम भी बनते हैं, वस्तुओं की मांग बढ़ती हैं और निर्यात में वृद्धि होती है। पर्यटन का सामाजिक, पर्यावरण और राजनैतिक प्रभाव भी देखने को मिलता है।

शब्दकोश: *आर्थिक गतिविधि, भावनात्मक एकीकरण, रोजगार, मुद्रा अर्जन, आयात, निर्यात।*

प्रस्तावना

सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर ने सुदूर देशों की परस्पर दूरियों को तो कम किया ही है साथ ही ऐसे तीव्रतम विकास भी किया है जो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को प्रत्यय बहुत प्रभावित करते हैं। ऐसे उद्योगों में पर्यटन उद्योग का नाम सबसे अग्रणी रूप में लिया जा सकता है। इस दौर में अब कंप्यूटर पर किसी भी देश के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी ही नहीं प्राप्त की जा सकती बल्कि घर बैठे–बैठे ही पर्यटक अपने आवास, खान–पान, भ्रमण आदि के लिए अग्रिम व्यवस्था कर सकता है। ऐसे में यह स्वाभाविक भी है कि इस उद्योग का सभी स्तरों पर विकास हुआ है, बावजूद इसके हमारे देश में अभी तक इस उद्योग से जितनी आय होनी चाहिए,

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

हो नहीं रही है। इसका कारण बेहतर प्रबंध का अभाव ही कहा जा सकता है। इक्कीसवीं शताब्दी से पर्यटन को आर्थिक विकास के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में पहचाना जाने लगा है। रोजगारोन्मुखता, विदेशी मुद्रा अर्जन, आय में वृद्धि और उत्पादन वृद्धि में पर्यटन के योगदान को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस उद्योग की हमारे देश को जरूरत है।

- **रोजगारः** भारत सरकार की राष्ट्रीय पर्यटन कार्य योजना के अनुसार, 2002–2005 पर्यटन उद्योग ने प्रत्यक्ष 10 लाख लोगों और अप्रत्यक्ष रूप से 135 लाख लोगों के लिए रोजगार पैदा किया। यह अनुमान किया था कि 2020 तक ये रोजगार बढ़कर दो गुना हो जायेगा। पर्यटन उद्योग में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करने की अद्‌भुत क्षमता है। होटल से लेकर विभिन्न टूर ऑपरेटरों, पर्यटन कार्यालयों, परिवहन संचालकों, टूरिस्ट गाइडों आदि के रूप में लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलता है। होटलो में सब्जी, मास, मछली, मुर्गी, अनाज आदि से एवं अन्य सहायक वस्तुओं से अप्रत्यक्ष रोजगार मिलता है और इन सब की एक श्रृंखला सी बन जाती है इसके अलावा हस्तशिल्प और हस्तकलाएँ कारीगरों और बुनकरों को भी रोजगार मिलता है होटलो में काम करने वाले उच्च प्रशिक्षित प्रबंधकों से लेकर कमरे मे काम करने बाले सेवाकर्मियों, परिवहन कर्मचारियों, आदि तक रोजगार मिलता है। रोजगार के सकारात्मक पहलुओं के बावजूद निम्नांकित मुद्‌दो पर गौर करना आवश्यक है :–
- पर्यटन से मिलने वाली नौकरियों छोटी–छोटी होती है, प्रबन्धक जैसी नौकरियों बाहर के लोगो को ही मिलती है
- पर्यटन दूवारा पैदा किया गया अधिकांश रोजगार मौसमी होता हैं।
- मौसम के दौरान पर्यटन के कारण अनिवार्य वस्तुओं के दाम बहुत बढ़ जाते हैं

  अतः पर्यटन विकास की योजना बनाते समय इन मुद्‌दो पर भी विचार करना चाहिए।
- **आयः** पर्यटन का रोजगार और आय प्रभाव एक दूसरे से गहरे रूप में सम्बद्ध है आमतौर पर मजदूरी और वेतन, व्याज, किराया के रूप में आय होती है पर्यटन से कई प्रकार की वस्तुको और सेवाओं की मांगे होती हैं जैसे खाद्य और पेय, परिवहन, मनोरंजन आवास, खरीददारी, स्थल दर्शन के लिए गाइड आदि पर्यटकों द्‌वारा किए गए खर्च से इन सेवाओ को प्रत्यक्ष आय ही नहीं होती है। बल्कि इससे होटलो, परिवहनसंचालको ट्रेवल एजन्टो, कलाकारो, मनोरंजन गृहों के मालिको शिल्पियो को भी रोजगार मिलता है रोजगार से होने वाली आय पर्यटको की संख्या उनके द्‌वारा किया गया खर्च उनके खर्च करने का तरीका। पर्यटन से अधिकाधिक अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होता है। और आय अर्जित होती है पर्यटक जो खर्च करता है वह एक आदमी से दूसरे आदमी के हाथो में चला जाता है परन्तु एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक जाने से राशि घटती चली जाती है क्यों कि प्रत्येक व्यक्ति अपना हिस्सा अपने पास रखता जाता है। पर्यटन से उत्पन्न मांग से अधिक रोजगार की आवश्यकता होगी और आय में वृद्धि होगी। और एक श्रंखला में वृद्धि होती जाती है। पर्यटन उद्योग अपनी स्थानीय बाजार से जितनी ज्यादा सेवाएँ और वस्तुएँ खरीदेगा आय पर उसका गुणित प्रभाव उतना ही अधिक होगा। सेवाओं और वस्तुओं के आपात की प्रवृत्ति जितनी ज्यादा होगी आय पर उसका गुणित प्रभाव उतना ही घटेगा, विभिन्न प्रकार के करो और प्रवेश शुल्क से सरकार को भी आमदनी होती है।
- **विदेशी मुद्राः** भारत की विदेशी मुद्रा अर्जन सम्बन्धी आर्थिक गतिविधि में पर्यटन की प्रमुख भूमिका रही है। भुगतान सन्तुलन की सांख्यिकी प्राप्त करने के क्रम में भारतीय रिजर्व बैंक ने पर्यटन से होने वाले विदेशी मुद्रा का आकलन किया। विदेशी मुद्रा में सलंग्न अधिकृत डीलरों की आमदनी के आधार पर भारतीय रिजर्व बैंक ने आंकड़े एकत्र किए। भारत सरकार का पर्यटन विभाग प्रतिवर्ष आने वाले पर्यटको की संख्या और प्रति विदेशी पर्यटक व्यय को गुणा करके प्रति वर्ष आकलन प्रस्तुत करता है साथ विदेशी मुद्रा अर्जन की गणना करते समय पर्यटन विकास.के लिए किए जाने वाले आयात को भी

सम्मलित किया जाना चाहिए। विदेशी मुद्रा सरकार को मिलना चाहिए थी लेकिन कालाबाजारी के कारण इसने कमी आई हैं यही रिसाव (लीकेज) हैं इसके कारणों की जांच होनी चाहिएः–

- विदेशी कम्पनियों को मेजबान देशो द्वारा शुल्कों में रियायत।
- टुअर ऑपरेटर द्वारा विदेशी विक्रेता को किया गया भुगतान।
- विदेशों में कार्यालय खोलने पर खर्च की गई विदेशी मुद्रा।
- हवाई जहाजों, वातानुकूलित बसों आदि वस्तुओं के आयात पर लगी लागत।

इस प्रकार रिसाव को कम करके विदेशी मुद्रा के अर्जन को बढ़ाया जा सकता है। रिसाव को कम करने के लिए रणनीति बनानी होगी

- बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के नियन्त्रण को रोकना।
- होटल के बिलों के भुगतान और खरीददारी में विदेशी मुद्रा का होना।
- स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर आयात विकल्प तैयार करना।

पर्यटन के आर्थिक लाभ

विश्व अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्वपूर्ण योगदान है. यो अन्य किसी उद्योग से किसी प्रकार से कम नहीं है. पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ आधार बन सकता है यदि पर्यटन प्रबन्धन के महत्त्व को समझकर इस दिशा में ठोस कार्य किया जा सके. पर्यटन आर्थिक क्रिया है और इसके तहत विदेशी पर्यटको पर किए गए व्यय के लिए प्रयोग किया जा सकता है. इससे क्षेत्रीय विकास को गति दी जा सकती है साथ ही बेरोजगारी को भी दूर किया जा सकता है. इसके अलावा समाज के लिए महत्त्व के अन्तर्गत यह कहा जा सकता है कि इसके द्वारा शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक लाभ प्राप्त होते हैं. यह अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को जागृत करता है तथा इससे समाज में रहने वाले लोगो का जीवन स्तर भी सुधारा जा सकता है. इस प्रकार राष्ट्रीय महत्त्व के अन्तर्गत राष्ट्र भौतिक एवं सरंक्षित दोनो प्रकार की आधारभूत संरचनाओ का विकास पर्यटन से किया जा सकता है.पर्यटन प्रबन्धन के अन्तर्गत न केवल पर्यटन उद्योग को सुसंगठित कर उससे होने वाले लाभो में वृद्धि की जा सकती है बल्कि सामाजिक रूप में भी पर्यटन से होने वाले लाभो में वृद्धि इस रूप की जा सकती हैं कि समाज के जीवन स्तर में वृद्धि कर विभिन्न आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का निस्तारण तथा बेकारी का उन्मूलन समाज के विभिन्न वर्गों हितो में सांमजस्य स्थापित करके किया जा सकता है. इसके अलावा वस्तुओं व सेवाओं की उपलब्धि के वृद्धि करके सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करते सामाजिक उत्थान में योगदान देकर पर्यटन के महत्त्व को पर्यटन प्रबंधन के द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में तो वैसे भी पर्यटन प्रबंधन का महत्व सर्वविदित है। इससे एक ओर जहाँ उपलब्ध भौतिक संसाधनों का बेहतर सदुपयोग किया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर मानव संसाधनों का भी समुचित उपयोग किया जा सकता है। पर्यटन प्रबन्धन जहाँ पूँजी निर्माण को प्रोत्साहन देता है, वहीं सन्तुलित आर्थिक विकास,गरीबी उन्मूलन (देश की समृद्धि व राष्ट्रीय योजनाओं के बेहतर निर्माण) में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है। पर्यटन प्रबन्धन का विशेष महत्व है। यहाँ पर्याप्त मात्रा में भौतिक संसाधन हैं, विपुल मानव संसाधन हैं, फिर भी पर्यटन उद्योग के विकास की गतिधीमी है। इस दिशा में पर्यटन प्रबन्धन को सभी स्तरों पर अपना कर विकास को बढ़ाया जा सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में पर्यटन प्रबन्धन के महत्व को समझना जरूरी है, क्योंकि पर्यटन के बेहतर प्रवन्ध द्वारा ही इसके भावी विकास की दिशा तय की जा सकती है। पर्यटन प्रबन्धन के निम्नलिखित आर्थिक लाभ हो सकते हैं रू

- **आर्थिक विकास की कुंजी**

पर्यटन राष्ट्र की महती आर्थिक क्रिया है। अर्थव्यवस्था में पर्यटन के आर्थिक मूल्यों का मूल्याँकन इसके राष्ट्रीय आय में किए गए योगदान, विदेशी मुद्रा विनिमय अर्जन, सरकारी राजस्व में योगदान तथा सृजित किए गए रोजगार के अवसरों से किया जा सकता है। अर्थव्यवस्था में पर्यटन के मूल्यांकन के अन्तर्गत इन सभी

क्रियाओं से ही पर्यटन के महत्व को समझा जा सकता है। इन सभी मे ंसमन्वय कर प्रबन्ध को इन में अपनाने से इनके और अधिक बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास की शक्तियों का द्वार खोलने के लिए प्रवन्धन अकेली सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। अतः यह कहा जा सकता है कि पर्यटन प्रबन्धन पर्यटन उद्योग के संचालन को कुशल एवं प्रभावी बनाकर असंख्य लोगो के लिए रोजगार के साधन उपलब्ध करा उन्हें आर्थिक शक्ति प्रदान कर सकता है,जिससे वे अपने जीवन स्तर को ऊंचा कर सके। प्रबन्धन विद्वान जॉनमी ने भी कहा है कि "पर्यटन में प्रबन्धन का समावेश होने से ही यह समस्त आर्थिक विकास की शक्तियो के द्वार खोल सकता है।

- **व्यवसाय का जीवन प्रदायक अवयव**

पर्यटन व्यवसाय का जीवन प्रदायक अवयव है पर्यटन व्यवसाय की सफलता इस के कुशल प्रबन्धन पर ही निर्भर है आज पर्यटन विकास की दृष्टि से कई सकारात्मक तत्व विश्वस्तर पर सामने आए हैं विशेष लौर से आर्थिक सुधार के स्त्रोत बाजार में आए लोगों के बीच नीतिगत संबंध, क्षेत्रीय देशों के बीच व्यापर में तेजी, कुछ देशों मे विदेशी मुद्रानियमो का उदारीकरण आदि। हमे पर्यटन व्यवसाय के विकास के नए पहलुओं पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। पीटर एफ.ड्रकर ने_का है कि प्रबन्धन व्यावसायिक सस्थाओ का जीवन प्रदायक अवयव है और यह साधनों को क्रियाशील कर उत्पादक इकाइयों में बदल देता है इसे पर्यटन में अपनाने से निश्चित रूप से पर्यटन व्यवसाय को गति मिलेगी।

- **स्थिरता विकास तथा विस्तार अवयव**

पर्यटन उद्योग की स्थिरता, इसके विकास तथा भविष्य में इसके विस्तार अवयव पर्यटन प्रबन्ध नही है। इस की स्थिरता, विकास व प्राप्त किया जा विस्तार से सही लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है देश में बढ़ती पर्यटको की. संख्या पर्यटन विकास को दर्शाती है, पर्यटन प्रबन्धन के तहत न केवल विश्व व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए वातावरण निर्माण करना होगा, बल्कि देश व राज्यों के पर्यटन आकर्षणों की मार्केटिंग विश्व बाजार में कर के इसे लाभकारी भी बनाना होगा। इसके अन्तर्गत पर्यटन को सुसंगठित, नियोजित नियंत्रित कर के विश्व अर्थव्यवस्था के तहत महत्वपूर्ण फैसले लेने होंगे तभी दूरगामी परिणामों के रूप में भारतीय पर्यटन उद्योग को स्थिर, विकसित कर भविष्य के लिए विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

- **मानवीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग का माध्यम**

पर्यटन एक उद्योग न होकर उद्योगों का बड़ा समूह है जिस में होटल, रेस्टोरेन्ट, परिवहन, यात्रा अभिकर्ता, यात्रा संचालक, सरकारी संगठन आदि सम्मिलित हैं। उद्योग के इस समूह में बड़ी संख्या में मनुष्य नियोजित होता है पर्यटन उद्योग में आज सर्वाधिक मानव संसाधन उपलब्ध हैं पर्यटन प्रबन्धन पर्यटन में लगे लोगों का सही मार्गदर्शन, अभिप्रेरण तथा नेतृत्व करके उन्हें अपना कामपूर्ण निष्ठा, तन्मयता तथा उत्साह के साथ करने के लिए प्रेरित करता है। इस दृष्टि से यह भी कहा जा सकता है कि पर्यटन प्रबंधन इस परिवर्तन तथा विकास का मुख्य माध्यम बन जाता प्रसिद्ध विचारक ए प्ले का कहना है की प्रबंधन व्यक्तियों का विकास है न कि वस्तुओं का निर्देशन इस दृष्टि से पर्यटन प्रबंधन को मानवीय संसाधनों के अधिकतम सीमा तक उपयोग का माध्यम कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

- **बाह्य वातावरण के साथ समन्वय का माध्यम**

विश्व पर्यटन संस्थान के अनुसार पर्यटन, अपने निरन्तर विस्तार के साथ नई शताब्दी में प्रवेश करने वाला, दुनिया भर की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाला उद्योग है। यह उद्योग पूरे विश्व को प्रभावित कर रहा है। पर्यटन उद्योग के विकास के स्रोत निरन्तर रूप से खोजे जा रहे हैं। ऐसे में पर्यटन प्रबन्धन ही वह सशक्त माध्यम है जिस के तहत विदेशी पर्यटन के हिसाब से विदेशी तथा देशी पर्यटन के हिसाब से एक राज्य से दूसरे राज्य के बाह्य वातावरण के मध्य समन्वय स्थापित किया जाता है। इस प्रकार बाह्य वातावरण के साथ समन्वय का पर्यटन प्रभावी माध्यम है। पर्यटन उद्योग का वातावरण नए–नए परिवर्तनों के कारण निरन्तर बदलता रहता

है। एक ओर जहाँ पर्यटन के मूल्य बदल रहे हैं वहीं दूसरी ओर नए पर्यटन स्थलों के विकसित होने के साथ ही पर्यटन व्यवसाय पर प्रगतिशील व्यावसायिक संस्थाएँ भी हावी हो रही हैं। ऐसे में विश्व पर्यटकों को देश में आकर्षित करने अथवा देशी पर्यटन के अन्तर्गत एक राज्य के पर्यटकों को दूसरे राज्य के पर्यटन स्थलों तक आकर्षित करने की दिशामें नवीन तथ्यों की जानकारी इकट्ठा करने की महती आवश्यकता हो रही है। इस आवश्यकता की पूर्ति आज के दौर में पर्यटन प्रबन्धन द्वारा ही सम्भव है। पर्यटन प्रबन्धन के तहत न केवल बाह्य वातावरण के साथ बेहतर समन्वय रखा जा सकता है, बल्कि पर्यटन उद्योग को प्रतिस्पर्धा के दौर में और अधिक सुसंगठित कर, इसे और अधिक प्रभावी व लाभकारी बनाया जा सकता है।

- **सांस्कृतिक, कलात्मक एवं सार्वजनिक धरोहर का संरक्षण**

पर्यटन से सांस्कृतिक वैभव, कलात्मक धरोहर तथा नैसर्गिक दृश्यों को संरक्षण मिलता है।राज्य के महलों, दुर्गों, किलों, हवेलियों में चित्रकारी, मीनाकारी, स्थापत्य कला आदि देखते ही बनती है।राज्य के महलों–हवेलियों के झरोखे, वास्तुकला, स्थापत्यकला, भवन निर्माणकला, चित्रकला आदि के चित्ताकर्षक एवं बेजोड़ नमूने हैं। इनका संरक्षण एक समस्या बन गई है। ये असुरक्षित एवं अलग–अलग बिखरे हुए हैं। विदेशी पर्यटन से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को भी बढ़ावा मिलता है विदेशी पर्यटक ही वस्तुओं के प्रचार को माह बनते हैं जिससे विदेशों में वस्तुओं की मांग बढ़ती है और नियति में वृद्धि होती है भारतीय वस्तुओं और हस्तशिल्प की गुणवत्ता और पर्यटको के माध्यम से विश्व भर में प्रचार होने से निर्यात काफी बढ़ जाता है।

पर्यटन स्थलों की वैविधयता, कला संस्कृति के वैभव, स्थापत्य कला के बेजोड़ स्थलों और ढेरों आकर्षण लिए यहां की धरती पर सैलानियों की आवक अभी भी कम है। प्रयास इस प्रकार किए जाएं कि यहां पर सैलानियों की आवक में तो वृद्धि हो ही, उन्हें बेहतर सुविधाएं और विशेष रूप से आत्मीय वातावरण मिले। आज आवश्यकता स्वदेशी पर्यटन को बढ़ावा दिए जाने की भी है। इससे एक ओर पारस्परिक सद्भाव और सौहार्द को बढ़ावा दिया जा सकेगा वहीं देश की भाईचारे की संस्कृति का विकास भी व्यापक स्तर पर किया जा सकता है जिसकी आज देश को सर्वाधिक जरूरत है। साथ ही पर्यटन उद्योग का विस्तार शहरों से निकालकर गाँव–गाँव तक किया जाए। नई पर्यटन नीति और राज्य सरकार के प्रयास से पर्यटन उद्योग को पर्यटन जन उद्योग के रूप में स्थापित किया जाए ताकि यह एक सामाजिक व आर्थिक क्रिया बने। देश के प्रथम प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की कही बात "हमें विदेशी दोस्त पर्यटकों का स्वागत न केवल आर्थिक कारणों से करना चाहिए क्योंकि वे विदेशी मुद्रा लाते हैं बल्कि इसलिए भी क्योंकि इससे आपसी सूझ–बूझ तथा एक–दूसरे के गुणों को बेहतर जाना जा सकता है।"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध – डॉ. राजेश कुमार व्यास
2. राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध–सिद्धान्त और व्यवहार – डॉ. हरिशंकर भार्गव
3. पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त – डॉ. जगमोहन नेगी
4. वर्ल्ड टूरिज्म – राम आचार्य
5. प्रगति प्रतिवेदन दृ पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग
6. वार्षिक रिपोर्ट – पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
7. इग्नू – पाठ्य सामग्री, पर्यटन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
8. राजस्थान में पर्यटन विकास – के.के. शर्मा
9. टुअरिज्म टुडे यू आई – रतनदीप सिंह
10. टुअरिज्म एण्ड इकॉनोमी, – वीरेन्ड कॉल

❑❑❑